Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 02, April, 2018, pp. 491-494

रामचरित मानस के रचना–काल में भारतीय समाज

दीपाली भार्गव *

सार

संसार में अधिक व्यक्ति ऐसे होते है जो जगत प्रवाह में बहा करते है, पर उच्च मनोवृत्ति के ऐसे महापुरूषों का समय समय पर अविर्भाव हुआ करता है जो जगत प्रवाह को सही दिशा की ओर मोड़ने का प्रयत्न करते है। तुलसीदास ऐसे महापुरूषों में एक हैं। उनका सारा प्रयास जनता–जनार्दन के उपकार के लिये ही था । वे जिस समाज की कल्पना करके चले वह स्वार्थ, त्याग और बलिदान सिखाने वाला था। उन्होंनें जिस राज्य की भावना की थी वह लोक–धारा केलिये राज्य सुख, ऐश्वर्य, आदि सबको न्यौछावर कर देने वाला था। उन्होंनें राजा व प्रजा के लिये जो आदर्श रखे थे, वे संक्षेप में, प्राचीन वर्ण व्यवस्था के पुनर्स्थापक और राम राज्य के प्रस्थापक थे।

राजनैतिक पारिस्थितियां

तुलसीदास का अधिकांश जीवन अक़बर के शासन काल में बीता। तुलसीदास का जन्म 1532 ई. में और मृत्यु 1623 ई. में मानी जाती है। उनके जीवनकाल में मुगल और शूर वंशी बादशाहों का ही शासन रहा उदाहरणार्थ हुमायु, शेरशाह, अक़बर जहांगीर आदि। तुलसीदास जी के ग्रन्थ–प्रणयन का प्रमुख उद्देश्य लोक कल्याण था। फलतः उन्होंनें अपने काल का सर्वांगपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है। गोस्वामी जी ने अपनी समकालीन राजनैतिक स्थिति का बडा भयावह चित्र खींचा है। उन्होंनें तत्कालीन मुस्लिम शासन को रावण राज्य के रूप में खड़ा करने के दुष्टों के अत्याचार से पीड़ित हिन्दु जनता को भुजा उठाकर ''निशिचर हीन करो मही'' [1] की प्रतिज्ञा करने वाले सर्व समर्थ प्रभु राम की शरण लेकर अभय होने का मार्ग दिखाया। (मुस्लिम शासक समस्त वेद प्रतिकूल कार्य में ही रूचि रखते थे फलस्वरूप शुभ–आचरण का लोप हो गया और धर्म कहीं नहीं सुन पड़ता था। अन्यायी शासकों के संम्पर्क से हिन्दु राजा भी अनीतिपरायण हो गये थे, जिन्हें राजधर्म का रंच मात्र ज्ञान नहीं था वे राजा बने बैठे थे और प्रजा पर मनमानी दण्ड–नीति का प्रयोग करते थे। अक़बर उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ और दूरदर्शी सि़द्ध हुआ।)

शासन मुसलमान था, प्रजा हिन्दु। प्रजा के उत्पीड़न पर कोई शासन दीर्घ काल तक स्थिर नहीं रह सका। मुगल साम्राज्य की नींव भी हिन्दु प्रजा की सद्भावना पर ही दृढ़ की जा सकती थी। उसने हिन्दुओं को उच्च पदों पर नियुक्त किया। (उसके पूर्ववर्ती मुस्लिम शासको के शासन काल में प्रायः धर्मान्ध उलेमाओं, काजियों, मौलवियों आदि का अधिक प्रभाव रहता था, इन्ही के हाथों में न्याय और प्रशासन सौंपा हुआ था। उसने न्याय– व्यवस्था की मुख्य शक्तियां सीधी अपने हाथ में ले लीं।) अक़बर ने ज़ाज़िया कर, जो हिन्दुओं के रोष का विशेष कारण था, उठा लिया । इन सब कार्यो का परिणाम यह हुआ कि मुग़ल सम्राज्य भारत में दृढ़ नींवो पर स्थापित हो गया और उसके पश्चात कई पीढियों तक स्थापित रहा। यह तब डॉवाडोल हुआ जब औरंगज़ेब ने आकर अकबर की नीति में आमूलचूल परिवर्तन कर नंगे उत्पीड़न की नीति अपना ली। वस्तुतः अक़बर ने धार्मिक सहिष्णुता को नीति के रूप में ही अपनाया था, विश्वास या उद्देश्य के रूप में नहीं।

* Associate Professor in Sociology, Department of College Education, Jaipur, Rajasthan, India.

स्वयं तुलसी को जहांगीर के शासन–काल में करागार में कुछ दिन काटने पड़े थे। इस प्रकार शासक वर्ग की विचारशून्य बर्बरता किस पराकाष्ठा तक पहुंच गयी थी इसका अनुमान उपर्युक्त घटनाओं से लगाया जा सकता है।

मुग़लों का शासन मूलतः सैनिक शासन था। इसमें समस्त शक्ति एवं सत्ता एक व्यक्ति के हाथों में केन्द्रित थी। शासक प्रजा के प्रति किसी प्रकार का नैतिक दायित्व अनुभव नहीं करते थे। न्याय–व्यवस्था अत्याधिक सदोष थी। स्थानीय जनता को कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे। बाहरी आक्रमण या आन्तरिक विद्रोह के समय ग्रामीण जनता को अपनी रक्षा स्वयं करनी पडती थी। ऐसी भयावह राजनैतिक परिस्थिति एवं मुस्लिम मतान्धता के योग में निरीह हिन्दु जनता को कैसी भीषण यातनाएँ सहनी पडती थीं इसकी कल्पना गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत चित्र से सहज ही की जा सकती है। उन्होंनें मुग़ल शासकों से उत्पीड़ित जनता के समक्ष राम के आदर्श शासन का चित्रण रामचरित मानस द्वारा प्रस्तुत किया। जिस राजनैतिक आदर्श की कल्पना का संकेत हमें तुलसी साहित्य में उपलब्ध होता है वह तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों की प्रतिक्रिया मात्र है।

आर्थिक परिस्थितियॉ

गोस्वामी जी के काल में आजीविका के अभाव में समग्र जनता हाहाकार कर रही थी, जठराग्नि से व्याकुल होकर लोग मारे मारे फिरते थे। लोग सभी प्रकार के कुकृत्य करने को प्रस्तुत थे, यहां तक कि अपनी संतान तक को बेचने को विवश थे। तुलसी ने इसका जिक्र अपनी कवितावली में किया है।[2] मुग़ल शासकों के कर्मचारी प्रजा को भाँति भाँति से सताकर अन्याय पूर्वक धन वसूल करते थे कृषको की प्रधान आवश्यकताओं की उपेक्षा कर लगान वसूल किया जाता था। लगान वसूल करने वाले छोटे छोटे कर्मचारी भी लुटरों की भॉति इन दोनो को नोचत –खसोटते थे। कितने ही अन्यायपूर्ण विशिष्ट कर लगाये गये थे, जिन्हें देते –देते किसान परेशान थे।[3] बार बार दुभिक्ष पड रहे थे। अन्न के अभाव में लोग कुत्ते–बिल्ली की तरह मर रहे थे [4] इतिहास से सिद्ध है कि सन् 1955–56 ई. में अकाल पडा । इससे भी दुर्भिक्ष 1595–98 के बीच पडा। 1613 से 1624 ई. के बीच उत्तर भारत में महामारी का भीषण प्रकोप हुआ, जिससे समस्त जनता त्राहि त्राहि कर उठी है। इसका हृदय विदारक चित्र गोस्वामी जी ने अंकित भी किया है। सारांश यह है कि तुलसी काल में हिन्दी भाषी प्रदेशों की जनता की आर्थिक दुर्दशा सीमा पार कर गयी थी।

धार्मिक परिस्थितियाँ

मुसलमानो के शासन काल में भारतीय समाज दो मुख्य धर्मो में विभक्त था – हिन्दु और मुस्लिम शासक होने के नाते मुसलमान समाज का उत्कृष्ट अंग माने जाते थे, दूसरी ओर शासित हिन्दु वर्ग निष्कृष्ट अंग माना जाता था। यवन हिन्दुओं की सभ्यता व संस्कृति को पूर्णतः मिटाने पर तुले हुए थे। विदेशी एवं विधर्मी शासको के कारण धार्मिक परिस्थिति बहुत जटिल और भयावह हो चुकी थी। हिन्दु समाज बाहय और आन्तरिक – दो प्रकार के संकटों से घिरकर अपने अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगा देख रहा था। बाहय संकट राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में था, आन्तरिक संकट सामाजिक–धार्मिक क्षेत्र में। राजनैतिक शक्ति यवनों के हाथों में केन्द्रित होने से जनता भीषण अत्याचारों और आर्थिक शोषण का शिकार बनी हुई थी। उधर यवन संसर्गजन्य विविध मत मतान्तरों के लोग वेद –विरोधी विषैले प्रचार से समाज आन्तरिक विघटन के कगार पर जा खडा हुआ था। तुलसीदास जी ने इन संकटों के स्वरूप एवं मूल को जानकार उनके निराकरण का उपाय सुझाया।

समाजिक परिस्थितियाँ

मुगल काल में समाज का संगठन सामन्तवादी आधार पर था। उस समय का समाज तीन वर्गो में विभाजित था– सामन्त वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग । सामन्त वर्ग को जीवन की प्रत्येक सुख सुविधा उपलब्ध थी। उनका जीवन ऐश्वर्य से परिपूर्ण था। शासको के अन्तपुर हजारों स्त्रियों से भरे रहते थे। सामन्त वर्ग भी अपने स्वामियों के पद चिन्हनों पर चलता था, उनकी भी सूरा और सुन्दरी कमजोरी थी और उनके द्वारा बड़े बड़े भोजों पर भी हजारों रूपये व्यय कर दिये जाते थे। उनका सम्पूर्ण जीवन विलासमय था लेकिन मध्यम वर्ग तथा

निम्न वर्ग लाचारी और निर्धनता से पीडित था। मध्यम वर्ग में व्यापारी और सरकारी कर्मचारी आते थे। उनका जीवन स्तर साधारण था। व्यापारी लोग अपना धन छिपाकर रखते थे क्योकि सूबेदारों और फौजदारो द्वारा धन अपहरण का सदैव भय बना रहता था। निम्न वर्ग बहुसंख्यक होते हुए भी समाज का सबसे अधिक शोषित वर्ग था। ये निर्धनता और भूखमरी का सामना कर रहे थे तथा जीवन की न्यूनतम आवश्यकतों की भी पूर्ति नही कर पाते थे। यह वर्ग अन्धविश्वास, भय और मूढता से आक्रान्त था।[5]

तुलसी काल में वर्णाश्रम व्यवस्था विदेशों और विधर्मी शासनों के परिणामस्वरूप भिन्न भिन्न हो चली थी। ''वरन धर्म नहीं आश्रम चारी।''[6] विदेशी शासन के अतिरिक्त इस व्यवस्था को आघात पहुँचानेवाला एक अन्य महत्वपूर्ण कारण था विभिन्न अवैदिक सम्प्रदायों का वेद विरोधी प्रचार से हिन्दु समाज की श्रद्धा वेदों पर से डगमगाने लगी। वेदों पर अश्रद्धा के कारण वेद प्रतिपादित वर्णाश्रम व्यवस्था शिथिल पड चली थी। फलतः चारो वर्ण अपने अपने कर्तव्य से च्युत हो गये थे। बाह्मण विद्यार्जन करने के स्थान पर या तो विद्याहीन थे [7] या वैदिक ज्ञान को तुच्छ अर्थोपार्जन का साधन बनाये हुए थे। क्षत्रिय प्रजा–रक्षक के स्थान पर प्रजा भक्षक बन गये थे। इस प्रकार सारी व्यवस्था गड़बड़ा गयी थी। आश्रम व्यवस्था भी ध्वस्त हो चली थी। जिन सन्यासियों को वैराग्य एवं अपरिग्रह का आदर्श प्रस्तुत करना था वे विषय – वासनाओं में लिप्त थे और जिन गृहस्थियों को धनवान होना था वे दरिद्र थे [8] बिना वर्ण या अधिकार का विचार कर नीच से नीच लोग भी सन्यासी बन स्वयं को बाह्मणो से पुजवा रहे थे। [9]

मानस काल की वैवाहिक स्थिति में पर्याप्त परिवर्तन आ गया था। विश्रृंखलता से क्षुब्ध समाज में स्थैर्य स्थापना के अतिरिक्त उत्थान का कोई और उपाय दिखायी नहीं दे रहा था। अनुलोम एवं विलोम का आदर्श जनता के सामने प्रस्तुत करना भ्रमोत्पादक था क्योकि राजवर्ग विदेशी था और स्वयं विजातियों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर रहा था। अतएव विवाह की पद्धति ही समाज का आदर्श बन सकती थी।वह एक ही वर्ण में विभिन्न गोत्रों में विवाह की प्रथा थी। सामाजिक संगठन विवाह इसी विधान के द्वारा अविकल रूप से सम्पादित कर रहे थे। तुलसी ने एक परिवर्तन विवाह प्रथा में और किया, उन्होंनें बहु विवाह का रूप भी अनुमत रखा उन्होंनें बहुपत्नित्व प्रथा के दुष्परिणाम नहीं देखकर भवितव्यता पर आश्रित कर दिया है। उन्होंनें इसके प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण को ही अपनाना उचित समझा क्योकि दुगुर्ण तो उनके समाज में प्रचलित था ही।

तुलसी के समाज में नारी की स्थिति शोचनीय थी। पर्दे का प्रचलन हो गया था। मुस्लिम अधिकारियों से मान–मर्यादा की रक्षा हेतु उन्हें घर की चारदीवारी के भीतर ही रहना पड़ता था। बाल–विवाह,सती प्रथा जैसी कुरीतियों का जन्म हुआ। परिवार में उनका सम्मान नहीं था। परलोक साधना के अधिकार से वे वंचित थी। वे आध्यत्मिक दायित्व से हीन थी। वेद शास्त्रों का अध्ययन उनके लिये वर्जित था।गृह–परिचर्या ही उनकी साधना मानी जाती थी। विधवाओं के लिये प्रसाधन निषिद्ध था। समाज में व्याप्त अनैतिकता के प्रभाववश कुछ विधवाओं के लिए श्रगांर आदि करने लगी थी। गोस्वामी जी ने इस प्रवृत्ति की निदा की है।[10] लड़के लड़कियों के विवाह सम्बन्ध माता पिता ही तय किया करते थे। तुलसीकालीन समाज में बरात में पुरूषों के साथ स्त्रियों नहीं जाती थी। पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में नारियों के प्रति संकीर्णता का व्यवहार होने लगा था। पुरूष वर्ग ने स्वाभिमान, स्वार्थ एवं अहं भाव की प्रेरणा से नारी पर एकाधिपत्य स्थापित कर लिया। ऐसी परिस्थिति में नारी सहज ही अज्ञान और मूक बनी रही थी। मुगलकालीन यंत्रणाओं एवं धर्म संकट की परिस्थति में नारी जीवन की गति कुठित होती चली गयी और स्वतंत्रता समाप्त होती गयीं तुलसी ने नारी को समाज में गौरव प्रदान किया। उनका कथन है स्त्री से हमारी जीवन पर्यन्त मित्रता रहती है। उसी से सृष्टि का काम चलता है और उसी से महान पुरूष अवतरित हुए है। हमें उनकी निन्दा नही करनी चाहिए।

तुलसीकालीन समाज में पारिवारिक जीवन अस्त व्यस्त हो चला था। विवाह के बाद पुत्र माता–पिता की चिन्ता नहीं कर पत्नि और उसके परिवारवालों को ही सबकुछ मानने लगा था। [11] पुरूष कुलीन पतिव्रता नारी को निकाल कर शुद्राओं को घर में डाल लेता था। [12] स्त्रियां भी रूप गुणशील सम्पन्न पति का तिरस्कार

कर पर–पुरूष का सेवन करती थी। [13] इस प्रकार घोर अव्यवस्था फैली हुई थी। समाज में नैतिकता का ह्रास होने लगा। मदिरा–पान की प्रवृति बढ़ने लगी जो कि यवनों के सम्पर्क में आने वाले उच्च वर्ग तक ही सीमित थी।[14] मांस भक्षण का उल्लेख तुलसी ने राक्षसों के संदर्भ में ही किया है। इससे पता चलता है कि मांस मदिरा का प्रचलन अधिकतर यवनों में ही था। यवनों के प्रभाववश समाज में कामुकता बढ गयी थी। समाज में उच्छंखलता इतनी बढ गयी थी कि लोगों को उचित–अनुचित का ज्ञान नहीं रहा था। विधि–निषेध टूट चुके थे और लोग मनमानी कर रहे थे।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि गोस्वामी तुलसीदास का प्रादुर्भाव ऐसे युग में हुआ जब भारतीय जनता के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अधिकारो पर मुस्लिम शक्तियों के आक्रमण हो रहे थे। मुसलमान देश को दास बना चुके थे और जन साधारण को बलपूर्वक धर्म–परिवर्तन के लिय बाध्य किया जा रहा था। इस महापुरूष ने ऐसे समय में देशवासियो के उद्धार का बीड़ा उठाया । उन्होंनें अपनी समता की सीमाओं को समझते हुए अपना कार्य क्षेत्र धर्म की सीमाओं तक ही सीमित रखा और अपनी सहज काव्य–प्रतिभा का उपयोग धर्म में जनता की आस्था दृढ बनाये रखने के लिये किया। उनके रामचरित मानस का व्यापक प्रभाव हुआ और हिन्दु जनता को मुस्लिम असहिष्णुता और अत्याचारों का प्रतिरोध करने का बल मिला।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- रामचरित मानस –6/919।
- कवितावली –7/96।
- तुलसी और उनका युग–डॉ. राजपति दीक्षित ।
- वाराणसी ज्ञान मण्डल लि.इलाहाबाद –4 पृष्ठ
- रामचरित मानस – 7/101/10।
- ईश्वरी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया प्र. 1947 पृष्ठ 565।
- रामचरित मानस –7/98/1।
- वही –7/100/8।
- वही –7/101/1–2।
- वही –7/100/5–7।
- वही –7/100/5।
- वही –7/100/4–5।
- वही –7/100/3।
- वही –7/100/4।
- Pannikar K.M : A Survey of India History III Ed. 1957 P . 169-70

♦❐♦